What is learning? Explain the classical theory of ~~Conditioning~~ learning (Conditioning theory of learning)

सीखना एक मानसिक प्रक्रिया है। जिसकी अभिव्यक्ति व्यवहार के द्वारा होता है। जब हम कोई बात सीखते हैं तो हमारे व्यवहार में एक तरह का परिवर्तन या परिमार्जन होता है उदाहरण के लिए अगर कोई बच्चा आग की एक जलती हुई वस्तु को छूता है तो उस वस्तु को छूते ही जलने लगता है उस वक्त बच्चा अपना हाथ तेजी से हटा लेता है वह सीख जाता है कि आग से हाथ जलता है इसलिए जलते हुए वस्तु को नहीं छूना चाहिए। यहाँ उस बच्चे में एक परिमार्जन होते दिखाई पड़ा। परन्तु मात्र व्यवहार में परिवर्तन या परिमार्जन (Modification) को सीखना नहीं कहा जा सकता। व्यवहार में परिवर्तन थकावट या अन्य किसी दूसरे कारण से भी सम्भव है अतः मनोवैज्ञानिकों ने सीखने प्रक्रियाओं की कई परिभाषाएँ दी है।

मॉर्गन गिलीलैंड के अनुसार सीखना अनुभव के परिणाम स्वरूप जीव के व्यवहार में कुछ परिमार्जन है जो कम से कम कुछ समय के लिए तो जीव द्वारा धारण किया जाता है।

मैकगो (McGeoch) के अनुसार सीखना अभ्यास के फलस्वरूप उत्पन्न व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन है। अधिकांशतः यह परिवर्तन एक निश्चित दिशा में होता है जिससे व्यक्ति की अभिप्रेरणात्मक अवस्थाओं की संतुष्टि मिलती है।

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार एवं विश्लेषण से सीखना प्रक्रिया के निम्नांकित ~~विशेषताएं~~ विशेषतायें बताई जा सकती है।

(1.) सीखने से व्यवहार में परिवर्तन होता है।

(2.) व्यवहार का यह परिवर्तन व्यक्ति में कुछ समय के लिए स्थाई रूप से बना रहता है। (3.) यह परिवर्तन एकाएक नहीं होता है, बल्कि व्यक्ति के अनुभव अथवा अभ्यास पर आधारित होता है।

"Content specific elements"

(4) सीखने की क्रिया के पीछे कोई अभिप्रेरण कार्य करता है कोई उद्देश्य रहता है।

(5) सीखने से व्यवहार में होनेवाला परिवर्तन मापा जा सकता है।

For BA (First Part)
Psychology (H)

~~what is learning? Explain the classical~~

classical theory of learning

यह सिद्धान्त काफी पुराना है जिसका प्रतिपादन रूस के शरीरशास्त्री Pavlov ने किया था। Pavlov ने कई concepts की व्याख्या की जैसे स्वभाविक उत्तेजना, स्वभाविक अनुक्रिया, तटस्थ उत्तेजना, अनुबंधित उत्तेजना अनुबंधित अनुक्रिया आदि। इस सिद्धान्त के अनुसार प्राणी स्वभाविक उत्तेजना के प्रति स्वभाविक अनुक्रिया करता है स्वभाविक उत्तेजना के साथ-साथ कुछ तटस्थ उत्तेजना भी वातावरण में उपस्थित रहती है कभी-कभी तटस्थ उत्तेजना के आने के कारण तटस्थ उत्तेजना के प्रति भी स्वभाविक अनुक्रिया भी होने लगती है ऐसी क्रिया को ही अनुकूलन (conditioning) कहा जाता है पैवलव (Pavlov) ने स्पष्ट करते हुए कहा है कि जब स्वभाविक उत्तेजना (VS) के प्रति होने वाली अनुक्रिया (CR), तटस्थ उत्तेजना (NS) या (CS) के प्रति होने लग जाती है तो ऐसी प्रक्रिया को अनुकूलन (conditioning) कहा जाता है इसे इस रूप में और स्पष्ट किया जा सकता है

भोजन (VS) —— लार (VR)

घंटी की आवाज (CS) लार (CR)

Parlov ने कुत्ते पर प्रयोग करके अपनी बात को प्रमाणित करने का प्रयास किया है। वाटसन नामक व्यवहारवादी ने भी अपने प्रयोग के आधार पर इसका समर्थन किया है परन्तु इन प्रयोगों से यह भी स्पष्ट होता है कि अनुकूलन स्थापित होने के लिए कुछ शर्तों का होना आवश्यक है जो निम्नलिखित है

(1) Need — अनुबंधन से सीखने के लिए आवश्यकता का होना आवश्यक है किसी वस्तु की कमी होना ही आवश्यकता है कुत्ता भूखा था इसलिए उसे भोजन की आवश्यकता थी। उसे इसलिए भोजन देखकर लार टपकाने की आवश्यकता थी यदि उसे भोजन की आवश्यकता नहीं होती तो शायद वह लार नहीं टपकाता और फिर अनुकूलन स्थापित नहीं हो पाता

(2) Reinforcement — जिस वस्तु या कारक से आवश्यकता की पूर्ति होती है उसे ही प्रबलन कहते हैं। प्रबलन का होना भी अनुकूलन के लिए आवश्यक है Parlov के प्रयोग में हम देखते हैं कि कुत्ते को घंटी की आवाज के बाद भोजन दिया जाता है। यहां भोजन ही प्रबलन है यदि यह नहीं होता तो कुत्ता कभी घंटी की आवाज पर

लाइ स्पकाश नहीं दिखता

(3.) Absents of disturbing stimulus —
जल्दी या मजबूत अनुकूलन के लिए यह शर्त भी आवश्यक है कि यहां बगैर किसी तरह की घातक उत्तेजना न हो वरना अनुकूलन स्थापित होने में या तो देर ~~लगेगी या~~ होगी या ______।
Pavlov ने sound proof lab में अपना प्रयोग किया था ताकि कुछ केवल घंटी की आवाज ही कुत्ते को सुनाई दे

(4.) Normal Condition of the learner-
अनुकूलन की एक आवश्यक शर्त है कि सीखने वाला सामान्य अवस्था में हो। यदि सीखने वाला खुद मानसिक रूप से सामान्य नहीं है असंतुलित हो तो वह सीखने का प्रयास ही नहीं करेगा। जिससे अनुकूलन स्वाभाविक होने में कठिनाई उत्पन्न होगी या हो ही नहीं पायेगी

(5.) Time interval between the stimulus and reinforcement- अनुकूलन की एक आवश्यक शर्त यह भी है कि उत्तेजना तथा प्रबलन के बीच निश्चित और सही अन्तराल। यदि दोनों की उपस्थिति में समय का अभाव हो या बहुत लम्बा अन्तराल हो तो अनुकूलन स्थापित नहीं हो पायेगा

Pavlov के प्रयोग में हमने देखा कि घंटी की आवाज के तुरंत बाद ही भोजन दिया जो दोनों के बीच के समय आदेश समयान्तर माना गया है

Evaluation — Pavlov ने अनुकूलन के आधार पर शिक्षण की व्याख्या करने की कोशिश की है परन्तु यह सम्भव नहीं है क्योंकी निम्नलिखित आधारों पर इन सिद्धान्तों की आलोचना की गई है।

(1) Razran ने इनकी आलोचना करते हुए कहा है कि अनुकूलन बच्चों में कठिन, वयस्कों में और कठिन तथा बुढ्ढों में बहुत अधिक कठिन है यह केवल जानवरों में ही सरल है क्यों की उसमें विकास नहीं होता है तथा अविकसीत प्राणी है जबकि ~~अनुकूलन एक~~ मनुष्य एक विकसीत प्राणी है जो आवाज तथा प्रतीक के आधार पर सीखता ~~सम्भव~~ है किन्तु जटिल विषयों का शिक्षण केवल अनुकूलन के आधार पर संभव नहीं है

(2) इनकी दूसरी आलोचना ~~इनकी~~ प्रयोगात्मक परिस्थिती के आधार पर की गई है Pavlov ने काफी नियंत्रित परिस्थिती में प्रयोग किया जिसके परिणाम स्वरूप

अनुकूलन स्थापित हुआ। परन्तु हर शिक्षण के लिए ऐसी परिस्थिति की हा जाग्रह संभव नहीं है। बहुत सारे शिक्षण सामान्य ~~परिस्थिति~~ परिस्थिति में सम्पन्न होता है ऐसी स्थिति में अनुकूलन स्थापित होना संभव नहीं है।

(3) इस सिद्धान्त की तीसरी आलोचना इसके स्थायित्व को लेकर की गई है। आलोचकों का कहना है इसके आधार पर शिक्षण काफी अस्थाई होता है। ~~जब तक~~ इस परिस्थिति में जबतक प्रबलन मिलता रहता है अनुकूलन होता रहता है किन्तु जैसे ही प्रबलन बंद कर दिया जाता है या समय अन्तराल बढ़ा दिया जाता है कि अनुकूलन टूट जाता है। अतः Pavlov के प्रयोग से यह स्पष्ट होता है कि यह सिद्धान्त सामान्य तौर पर मान्य नहीं है।

(4) कुछ आलोचकों का कहना है कि इस सिद्धान्त में प्रयास को काफी महत्व दिया गया है अनुकूलन अभ्यास पर ही आधारित होता है उत्तेजना हो कि प्रबलन हो यही प्रक्रिया कई बार दुहराई जाती है जबकि कई ऐसे शिक्षण है जिनमें अधिक अभ्यास की आवश्यकता नहीं होती है इतना अधिक अभ्यास पूरी व्यवस्था को यांत्रिक (Mechanised) बना देती है

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि अनुकूलन सिद्धान्त, शिक्षण की समुचित व्याख्या में समर्थ नहीं है क्योंकि इसकी कई सीमाएँ हैं। फिर भी इस सिद्धान्त को पूरी तरह से नकारा भी नहीं जा सकता है क्योंकि प्राणी कई प्रकार के शिक्षण अनुकूलन के आधार पर ही प्राप्त करता है इस तरह के असामान्य तथा सामाजिक व्यवहार (अनुकूलन) के आधार पर सीख पाते हैं अतः इस सिद्धान्त की सार्थकता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है शिक्षण की समुचित व्याख्या के लिए अन्य सिद्धान्तों के साथ-साथ ~~इसको~~ इसका भी अपेक्षा किया जा सकता है।

From
Kumar Patel
Assistant professor
Maharaja College, Ara
Department of Psychiology

~~The above task~~